हिन्दोस्तां हमारा

इरफ़ान हबीब

हिन्दोस्तां हमारा

इरफान हबीब

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2026

© SAHMAT

सज्जा : ललित नारायण (बन्टी)

वित्तीय सहायता के लिए हम रज़ा फाऊंडेशन और आई. सी. ट्रस्ट के आभारी हैं।

अनुक्रम

भूमिका	3
भारत का बनना एक विचार के इतिहास पर टिप्पणियां	7
एक राष्ट्र का सपना भारत की अवधारणा की हिमायत में	25
गांधी का बेहतरीन वक्त	47
स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा और जवाहरलाल नेहरू	75
साक्षात्कारः आर एस एस के राष्ट्रवाद और इतिहास के पुनर्लेखन की उसकी कोशिशों की असलियत	100

भूमिका

देश और राष्ट्र की परिकल्पना आज तीखे संघर्ष का मैदान बनी हुई है। यह संघर्ष इस समय इसलिए और भी तीखा है कि आज के देश के शासक और उनके संगी, देश और राष्ट्र दोनों की उस परिकल्पना के खिलाफ युद्धरत नजर आते हैं, जो ब्रिटिश गुलामी से इस देश की आजादी की लड़ाई के बीच अर्जित की गयी थी और एक तरह से आजादी के बाद के अनेक दशकों से कॉमनसेंस बनी हुई थी। आजादी के साथ आए विभाजन के सारे सांप्रदायिक खून-खराबे के बावजूद अगर स्वतंत्र भारत ने दृढ़तापूर्वक धर्मनिरपेक्ष रहना मंजूर किया और कम से कम राजनीतिक-धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक समानता के आदर्श को अपने संविधान के केंद्र में जगह दी, तो यह इसी कॉमनसेंस का दबाव था। प्रोफेसर इरफ़ान हबीब के चार व्याख्यानों और एक साक्षात्कार का संकलन, 'हिन्दोस्तां हमारा' आज के इसी संघर्ष के अर्थों की निशानदेही का प्रयास करता है।

प्रोफेसर हबीब, जिन्हें सहज ही भारत का सबसे मुकम्मल इतिहासकार कहा जा सकता है, स्वाभाविक रूप से इस संघर्ष को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखते हैं। संकलन के पहले दो व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली तरीके से, दूसरों से भिन्न एक देश होने की चेतना के उदय के इतिहास का सार-संक्षेप ही पेश नहीं करते हैं, अपने उदय के समय से ही इस चेतना के बहु- पारंपरिक आधार पर पनपने को भी रेखांकित करते हैं। वह इस चेतना के विकास में "मध्यकालीन संगम" की भूमिका को गहरे रंग से रेखांकित करते हैं, जिसने

भारतीय परंपरा की एकांतिकता को तोड़ने में शायद सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। अचरज नहीं कि देशभक्ति की पहली सबसे प्रखर अभिव्यक्ति अमीर खुसरो में मिलती है। विशाल और एकीकृत मुगल साम्राज्य, राजनीतिक शीर्ष से एक देश की भावना को मजबूती देता है।

और प्रोफेसर हबीब याद दिलाते हैं कि फिर भी यह एक राष्ट्र होने की चेतना नहीं थी। यह चेतना 1857 के विद्रोह के भी केंद्र में नहीं थी। देश होने के एहसास को एक राष्ट्र होने की चेतना में विकसित और रूपांतरित किया, ब्रिटिश उपनिवेशविरोधी राष्ट्रीय आंदोलन ने औपनिवेशिक हुकूमत से लड़ते हुए इसी क्रम में समाज सुधारों की धारा के जरिए, जाति पर आधारित असमानतापू समाज और धार्मिक व अन्य आधारों पर विभाजित समाज की जगह पर, एक समान नागरिकों के समाज के निर्माण के क्रम में ही राष्ट्र बना। राष्ट्र के विकास की यात्रा की अपनी इस प्रस्तुति के जरिए, प्रोफेसर हबीब बहुत ही कन्विंसिंग तरीके से रेखांकित करते हैं कि धर्म आधारित राष्ट्र का विचार तो हिन्दोस्तां या भारत के विचार और इतिहास, दोनों का ही विलोम है।

संकलन के बाद के दो व्याख्यानों में प्रोफेसर हबीब ने इस तरह राष्ट्र के निर्माण के दो सबसे बड़े नायकों, महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के योगदानों की विशिष्टता को ही रेखांकित नहीं किया है, उनके योगदानों की परस्पर पूरकता को भी गहराई से रेखांकित किया है। जहां गांधी के संदर्भ में वह रेखांकित करते हैं कि कैसे उन्होंने राष्ट्रवाद के साथ "जन" को जोड़ा और ऐसा एक ओर किसानों व अन्य गरीबों की मांगें उठाने तथा समाज सुधार के

तत्वों को आंदोलन के साथ जोड़ने के जरिए किया, वहीं नेहरू के संदर्भ में रेखांकित करते हैं कि कैसे उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को विवेक की भाषा और एक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना दी। कांग्रेस का कराची प्रस्ताव, जो अनेक मुद्दों पर खुद गांधी के विचारों को अमान्य करता था तथा एक मूलगामी घोषणा I की तरह था और अनेक पहलुओं से नेहरू के आलोचना करने के बावजूद, गांधी का नेहरू को अपना विचारधारात्मक उत्तराधिकारी घोषित करना, इन दोनों महान नेताओं के परस्पर प्रेम भाव ही नहीं उनकी परस्पर पूरकता के भी संकेतक हैं।

"गांधी का सबसे शानदार वक्त" में आजादी के फौरन बाद फूटे सांप्रदायिक दावानल के खिलाफ गांधी के नैतिक संघर्ष का बहुत ही प्रभावशाली आख्यान प्रस्तुत करते हुए, प्रोफेसर हबीब न सिर्फ बलपूर्वक यह रेखांकित करते हैं कि भारत अगर आज धर्मनिरपेक्ष है तो यह ऐसे संघर्षों का ही फल है, वह यह भी याद दिलाते हैं कि ऐसे नाजुक मौकों पर अपने विश्वासों पर बलपूर्वक कायम रहकर लोगों के बीच जाने वाले ही, तूफानों का रुख मोड़ने का भी करिश्मा कर के दिखा सकते हैं।

अंत में वह चेतावनी, जो इस समूचे संकलन में समायी हुई है और साक्षात्कार के जरिए खुलकर सामने आती है। हिन्दोस्तां या भारत उसे हम जिस रूप में जानते हैं, कोई प्राकृतिक चीज नहीं है बल्कि जनता की चेतना का फल है। प्रोफेसर हबीब के शब्दों में यह 'भारतीय जनता का सबसे बड़ा सर्जन' है। और जिसका सृजन हुआ है, भले ही हजारों वर्षों में जनता की धा ने उसे रचा हो, उसे नष्ट भी किया जा सकता है। आज देश के सामने ऐसे ही

विनाश की चुनौती है। यह संकलन अगर इस चुनौती का सामना करने में हिन्दोस्तान वालों की जरा सी भी मदद कर सके, हम अपना श्रम सार्थक मानेंगे।

हिंदी में यह संकलन प्रस्तुत करना संभव बनाने के लिए हम सहीराम और ममता के आभारी हैं।

राजेंद्र शर्मा

दिसंबर 2016